Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / SJIF Impact- 5.16/ March - April 2026 / VOL-02 ISSUE-V

33

मृणाल पाण्डे के उपन्यासों में ग्रामीण नारी जीवन

प्रा. डॉ. सुनील वळवी
सहायक प्राध्यापक एवं शोधनिर्देशक हिंदी विभाग,
मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई.

मृणाल पाण्डे जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व बहुआयामी रहा है। संपूर्ण हिन्दी साहित्य का मूल्यांकन करने के पश्चात यही तथ्य सामने आयेगा कि हिन्दी की महिला लेखिकाओं में मृणाल पाण्डे का स्थान विशिष्ट है। शायद ही कोई महिला लेखिका होगी जिनका अनुभव मृणाल पाण्डे जी के समान होगा। शरीर गठन, रहन-सहन, विनम्रता, भावुकता संवेदनशीलता, वक्तृत्व कौशल आदि मृणाल जी के व्यक्तित्व के पहलू है। माँ शिवानी से उत्तराधिकारी के रुप में उन्हें साहित्यिक वातावरण प्राप्त हुआ। फलस्वरुप वे एक सफल साहित्यकार एवं पत्रकार के रुप में हिन्दी साहित्य की सेवा कर रही है।

साहित्य सृजन की प्रेरणा उन्हें अपनी माँ शिवानी से ही मिली थी। मृणाल जी का कार्यक्षेत्र अत्यंत व्यापक रहा है। उपन्यास, कहानी, निबंध, नाटक, स्त्री-विमर्श से सम्बन्धित साहित्य, पत्र-पत्रिकाएँ, संपादन, अनुवाद, अंग्रेजी साहित्य उपन्यास, मीडिया आदि विधाओं तथा प्रसार माध्यमों के द्वारा उन्होंने सशक्त वाणी हिन्दी साहित्य को दी है।

मृणाल पाण्डे का 'पटरंगपुर पुराण' उपन्यास ही नहीं, अपितु 'हमका दियो परदेस', 'देवी' आदि औपन्यासिक कृतियाँ भी ग्रामीण परिवेश में रची गयी है। ग्रामीण परिवेश में घुला मिला होने के कारण मृणाल पाण्डे के उपन्यासों में लोक संस्कृति और लोक जीवन अधिक स्पष्ट और उज्वल दिखाई देता है। 'पटरंगपुर पुराण' उपन्यास पूर्णतया एक ग्रामीण परिवेश से सम्बन्धित उपन्यास है। पटरंगपुर के पहाड़ी जीवन पक्ष के साथ-साथ वहाँ के वासियों की समस्याओं का चित्रण करके पर्वतीय ग्रामीण अंचल को मृणाल पाण्डे ने नया रुप दिया है। किसी भी ग्रामीण अंचल विशेष की अपनी संस्कृति, रहन-सहन, रीति-रिवाज, प्राकृतिक छटा, भौगोलिक परिवेश, जन जीवन की चेतना, वर्ग भावना, परंपरा, अन्धविश्वास एवं विभिन्न आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक एवं राजनीतिक अवस्थाओं का समग्र अंकन ही ग्रामीण जीवन की अभिव्यक्ति के माध्यम है।

'पटरंगपुर पुराण', 'हमका दियो परदेस', 'देवी' आदि उपन्यासों में स्थान-स्थान पर ग्रामीण दृश्यों कार्य व्यवहारों तथा संवादों का प्रयोग हुआ है। उपन्यास का परिवेश पहाड़ी शहर है। इसलिए पहाड़ी शहर के रीतिरिवाजों के दर्शन भी इन उपन्यासों में होते हैं। यह स्पष्ट है कि पटरंगपुर पुराण अपने कथ्य, परिवेश वातावरण और भाषा की दृष्टि से पूर्ण ग्रामीण औपन्यासिक कृति है। 'पटरंगपुर पुराण' का एक उदाहरण द्रष्टव्य है, "लछिमी ने, सुना, उन्हीं दिनों एकादशी के बरत के बाद अन्न-जल भी त्याग दिया। पूजा के बखत आचमन का चारेक चम्मच जल मुँह में लेने वाली हुई, बस। मुँह में ठहरी देवी धान की सुपारी। बस सुन हाथ उठा के मना कर देने वाली हुई, मेरे पास कोई मत आओ करके। सुना, मरने से ठिक तीन दिन पहले उसने मुँहबेल निकाला। ह हो, रामदज्जी ज्योतिषी की उहरी कन्या, गणना करके जान लिया होगा कि चैत मास की पर्तिपदा को मुझे जाना है करके।"1

इसी उपन्यास में गाँव की औरतों का कारुण्यभरा मनोवैज्ञानिक चित्रण मिलता है। गाँव के गरीब तथा अधपागल दिपुआ तथा उसकी माँ की आर्थिक हालत देखकर वहाँ की औरतें चोरी-छिपे हर संभव सहायता करती है। इस सम्बन्ध में आमा बताती है, "दया के मारे पीछे के रास्ते बुला-बुला के खाते-पीते घरों की गृहस्थ औरतें निरंतर पुराने कपडे तो कभी साबुन या घर का साग-ताग वगैरा दिपुआ की हजा को देते रहने वाली हुई।"2

हिन्दू धर्म में जाति व्यवस्था सर्वोपरि है। ग्रामीण क्षेत्र में वर्ण-व्यवस्था और जातिय-भेदभाव आज भी विद्यमान है। देश के संविधान के अनुसार यह अवैध होने पर भी ग्रामीण एवं शहरी संस्कृति में यह समस्या आज भी पनप रही है। इसी उपन्यास की चम्पा बुआ छु-आ-छूत को मानने वाली नारी है। जिसका मनोवैज्ञानिक चित्रण 'पटरंगपुर पुराण' में मिलता है। चम्पा के छुआछूत के नियम पक्के है। इस संदर्भ में आमा बताती है, "छूतछात के मारे बड़े से बड़े खानदान में बहुएँ भी पकाने वाली हुई, बहुएँ ही नल से पानी लाने वाली हुई। नल भी कहाँ-कहाँ ठहरे तब ?"3

मृणाल पाण्डे ने लगभग अपने सभी उपन्यासों में पहाड़ी ग्रामीण जीवन का भी चित्रण किया है। पहाड़ का जीवन काफी कठिन होता है। 'रास्तों पर भटकते हुए' उपन्यास की नायिका मंजरी कहती है कि पहाड़ी गरीबी को वही जान सकता है जो पहाड़ में जाकर जीवन व्यतित करें। पहाड़ की परनिर्भरता और गरीबी के कई रुप है। इसी कारण पहाड़ी क्षेत्रों के लोग मैदानी क्षेत्रों में आकर बस जाते है, जहाँ उनकी गरीबी का फायदा उठाया जाता है। उनसे गलत कार्य कराया जाता है। बण्टी और उसकी माँ की दिल्ली शहर में जब हत्या हो जाती है तब उनकी मौत की गुत्थी सुलझाने से पहले मंजरी कहती है, "उन तमाम पुरानी बातों का, घटनाओं का दबाव मेरे जिगर पर मेरे सीने, मेरे भेजे, मेरी जुबान पर बढ़ता जा रहा है। पर क्या कोई मैदानी व्यक्ति हम पहाड़ियों की यह जटिल व्यथा-कथा समझ सकता है? वह न पाने का कष्ट ? वह पा लेने की ग्लानि ? वह दे सकने, न दे सकने के बीच का, निरन्तर हृदय को मथने वाला अंतर्द्वंद्व, जो हर प्रवासी पहाड़ी यहाँ, कुरुक्षेत्र की पथरीली बंजर जमीन पर खड़ा होकर झेलता है। उसे पी. सी. के आगे व्यक्त करें भी तो किस भाषा में ?"4

©Copyright 2025 ADRJ. All Rights Reserved

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / SJIF Impact- 5.16/ March - April 2026 / VOL-02 ISSUE-V

'अपनी गवाही' उपन्यास में कृष्णा की माँ पार्वती पहाड़ पर रहती है। वे पढ़ी-लिखी महिला है। नियमित समाचार पत्र पढ़ती है और न्युज भी सुनती है। कृष्णा अपनी माँ से बहुत प्रेम करती है। गर्मी की छुट्टियों में अपनी बेटियों के साथ माँ से मिलने पहाड़ पर जाती है। कृष्णा अपनी बेटी के साथ बदरीनाथ की यात्रा पर जाती है तो रास्ते में पहाड़ धँस जाने से कठिनाई होती है। वह कहती है, "वहाँ पहाड़ धँसा था और मिट्टी-पत्थर खिसक आने से सड़क बंद हो गयी थी। मतलब था यात्रा को यहीं समाप्त करना। कृष्णा को जल्दी ही स्थिति की पूरी जटिलता समझ में आ गयी। सड़क पर ना सिर्फ पहले से खिसका मलबा भरा था, बल्कि अभी भी ऊपर से पत्थर गिर रहे थे। दोनों तरफसे गाड़ियाँ रुकी पड़ी थी।"5

उपन्यास में कृष्णा गाँव के लोगों की निजी जिंदगी तथा आर्थिक विषमता से गुजरते इन लोगों के बारे में अपने सहकर्मियों से जानकारी प्राप्त करती है। गाँव में रहने वाले माँ-बाप कभी फसल लगाने के लिए तो कभी बेटियों की शादी या मोतियाबिन्द का ऑपरेशन कराने के नाम पर लगातार पैसे माँगते है। आर्थिक तंगी से गुजरते हुए माता-पिता अक्सर गाँव से अमीर वर्ग से धन लेते है।

'अपनी गवाही' उपन्यास में जहाँ ग्रामीण पहाड़ी जनजीवन का चित्रण मिलता है वहाँ मृणाल जीने पहाड़ी जीवन की त्रासदी पर रोशनी डाली है। पहाड़ी जीवन को लेकर मृणाल जी ने कृष्णा का मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है।

शहरी सभ्यता की तुलना में ग्रामीण सभ्यता में दया, माया, ममता तथा परोपकार की भावना अधिक मिलती है। गावों में सेवापरायण की भावना आज भी विद्यमान है। 'अपनी गवाही' उपन्यास में अपने डॉक्टर पिता की सेवा परायणता, दया का भाव तथा ग्रामीण किसानों का डॉक्टर के प्रति आस्था एवं लगाव को देखकर पार्वती प्रभावित हो जाती है। किसान और पिता के बारे में वह कहती है, "दीन-हीन व जख्मी लोगों की हालात को देखकर उनके मन में दया भावना उमड़ पड़ती थी तथा लोग भी स्वस्थ होकर अपने खेत की ताजा उपज तथा खाने की अन्य चीजे लेकर डॉक्टर साहब के घर पहुँच जाते थे, अक्सर जमीन-जायदाद की लढ़ाई में जख्मी लोग खाट पर लादकर अस्पताल लाए जाते थे उनके जिस्म हंसिए, बल्लम, गैंडासे, कुदाल जैसे किसी भी हथियार से बुरी तरह काटे गए होते थे जो हमलावर के हाथ में झगड़ते वक्त रहा होता है। कुछ इलाज से बच जाते थे, कुछ चल बसते थे। डॉक्टर साहब जिनकी जान बचा पाते थे, वे लोग उनका उपकार मानते हुए बाद में वर्षों तक अपने खेत की ढेरों ताजा उपज आलु, प्याज, हरी सब्जियाँ, संतरे सेब घर में बने खुशबूदार घी से भरी लकड़ी की ठेकिया लेकर हाजिर हो जाते थे। इतना बढ़िया जमा दही वे लोग लाते थे कि आप चाहे तो उसे काटकर पॉकेट में रख लिजिए और उसमें एक बूंद पानी निकालकर कपड़े को खराब नहीं करेगा।"6 अतः स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि उपन्यास की पार्वती के इस कथन में ग्रामीण संस्कृति के साथ-साथ खेती-बाड़ी को लेकर होने वाले झगड़े आदि का चित्रण परिलक्षित होता है।

ग्रामीण अंचल विशेष संस्कृति में आज भी बेटा-बेटी में भेदभाव माना जाता है। मृणाल पाण्डे द्वारा लिखित उपन्यास 'हमका दियो परदेस' में इस समस्या के साथ-साथ प्रेमसंबंध को बुरा मानने का चित्रण मिलता है। लड़की के मनोविज्ञान की नीव यहीं से पड़ती है। लड़की को बार-बार लडकी होने का एहसास दिया जाता है। इसी भेदभाव के चलते नारी में हीनता, कुण्ठा एवं निराशा का जन्म होता है। उपन्यास की टीनू बचपन से ही लड़के एवं लड़कियों में किये जाने वाले भेदभाव से परिचित हो जाती है। जब वह अपनी मौसी की शादी में नानी के घर अल्मोडा आती है तो उसे लगता है, "लोगों से अटे घर में जहाँ बेटों के बेटों की ही पूछ होती हो, बेटियों की बेटियों का काम चिड़चिड़ी या रोनी होने से नहीं चलेगा। उन्हें बड़े लोगों की निगाह में चढ़ना हो तो उन्हें बतरस का जादू जगाना आना चाहिए।"7

उपन्यास में टीनू की नानी प्रेम का विरोध भी करती है। ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी प्रेमसंबंध को बूरा माना जाता है। प्रेमविवाह अस्वीकृत है। माता-पिता के अनुसार शादी तय की जाती है। उपन्यास में टीनू की नानी के मन में इस बात को लेकर जो नफरत है वह इन शब्दों में व्यक्त हुई है, "औरत के लिए मरा जा रहा है, जैसे मरने के लिए उससे बेहतर चीजे बची ही नहीं। मर्दुओं को दूध पिलाओ, गुलामों की तरह एक टाँग पर खड़े रहकर इनकी चाकरी बजाओं, खिला-पिलाकर छै-छे फुट का कर दो और फिर फर-फर-फर पेटीकोट की बयार जहाँ लगी और ये छू-मन्तर हुए।"8

'देवी' उपन्यास में पहाड़ी क्षेत्र में रहने वाली बड़ी अम्मा का मनोवैज्ञानिक चित्रण मिलता है। बड़ी अम्मा पहाड़ से उतरकर जब अपने बेटों के पास आती है तो उसे अजीब अनुभव मिलता है। ग्रामीण संस्कृति में हर घर में साँस का अपना अलग रुतबा होता है। ग्रामीण तथा पहाड़ी क्षेत्र में रहने वाली अम्मा जब अपने बेटों के पास आती है तब उसकी मनोदशा का चित्रण इन शब्दों में मिलता है, "लेकिन आँसूभरी बहुओं ने बताया था कि पहाड़ों से उतरी बड़ी अम्मा के साथ रहना नरक से कम नहीं था। बेटों की गृहस्थी में उन्हें लगता कि वे मेहमान सी है। बेचैन, परेशान वे बेटे-बहुओं की शिकायतें करती। अगर परिवार चकरघिन्नी की तरह उनके चारों तरफ चक्कर न काटता रहे, तो बड़ी अम्माँ का मुँह फूल जाता।"9

प्रस्तुत 'देवी' उपन्यास में ग्रामीण तथा नगरीय सभ्यता में जो टकराहट है उसका भी चित्रण मिलता है। उपन्यास में पारु मौसी मौन रहकर अपनी सास का प्रतिकार करती है, जो अत्यंत प्रभावी प्रतीत होता है। जब वह नयी दुल्हन का रुप अपनाती है तब उसका भाई उसे इंग्लैण्ड से एक खुबसुरत स्वेटर लाकर देता है, बाद में वह घर की औरतों के बीच शान बधारती है। इस पर सास कहती है, "घर की एक बहु तो पूरी अंग्रेज हुई जा रही है और लगता है कि किसी दिन अपने बेटे के लिए विलायत की महारानी की बेटी ही माँग लायेगी।"10 आगे पारु मौसी जाड़े-भर पहाड़ की कड़कड़ाती सर्दी में भी स्वेटर नहीं पहनती जिसकारण उसे निमोनिया हो जाता है। अतः उपन्यास में ग्रामीण विचारों से प्रभावित साँस का मनोवैज्ञानिक चित्रण हुआ है।

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / SJIF Impact- 5.16/ March - April 2026 / VOL-02 ISSUE-V

गाँवों में पर्व-त्यौहारों का अपना अलग महत्व होता है। विशेषरुप से ग्रामीण औरतों पर इसका प्रभाव अधिक पाया जाता है। 'देवी' उपन्यास में लेखिका ने दिवाली के त्यौहार को लेकर लिखा है, "दिपावली और शारदीय पूर्णिमा कोजागिरी पूर्णिमा के दो पर्वो पर परिवार में धन-धान्य, सम्पत्ति, गोधन और कुटूंब परिवार की रक्षक दात्री श्रीलक्ष्मी की पूजा विशेष रुप से होती है।"11 समस्त परिवार मिलकर माँ लक्ष्मी का पूजन करते है। एक अन्य स्थान पर लेखिका लिखती है, "बड़े बेटे की शादी हाल में ही हुई थी, दिवाली के दिन सास जी ने नई बहू को घर के पुश्तैनी गहने पहनाएँ वे खुद भी मोती पन्ने जड़ी नथ पहने जगमगा रही थी। दोनों ने मिलकर फल-फूल, दिप-अगरु और मिठाइयों से लक्ष्मी की पूजा की। नए रेशमी कपड़े उनके चलते फिरते, उठते-बैठने सरसरा रहे थे। पिता और बेटे पंचप्रदीप घुमाकर आरती कर रहे थे। सास जी घण्टा बजा रही थी, बहू शंख फुंक रही थी।"12

इसके अतिरिक्त 'देवी' उपन्यास में ग्रामदेवियों के उत्सव का चित्रण मिलता है। उपन्यास में दक्षिण के त्यौहार, येल्लमा तथा एल्लमा में सामाजिक क्रम उलटा हो जाता है। छोटी जाति की महिलाएँ शराब पीकर ऊँची जाति के लोगों को अश्लील गालियाँ देती हुई शराब के कुल्ले करती है। ऊँची जाति के व्यक्ति इसे देवी का आशीर्वाद समझते हुए उनका सम्मान करती है। घर की नारियाँ इसे अपना सौभाग्य मानती है।

निष्कर्ष :

संक्षेप में मृणाल पाण्डे ने अपने उपन्यास साहित्य में ग्राम्य तथा पहाड़ी जीवन की नारी समाज से जुड़ी हुई सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं, पीड़ाओं, त्रासदियों, मनोव्यथाओं को उभारते हुए सामाजिक संकीर्णताओं की उपेक्षा करते हुए नारी जीवन को पूर्ण समग्रता के साथ प्रस्तुत किया है। व्यक्तिगत परिवेश से लेकर सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक परिवेश का यथार्थ चित्रण उनके कथा साहित्य की खास विशेषता रही है। नारी की कुण्ठा, अजनबीपन, साहसहीनता, द्वंद्व, आकांक्षाएँ और उनकी पूर्ति न होने का क्षोभ, असंगति, अन्तर्विरोध आदि न जाने कितनी मानसिक स्थितियों का चित्रण मृणाल जी ने अपने उपन्यास साहित्य में किया है। नारी जीवन की विभिन्न समस्याओं मनोवैज्ञानिक चित्रण करने में मृणाल जी सफल हुई है।

मृणाल पाण्डे ने समाज का अत्यंत नजदीकी से अध्ययन किया हैं। उनकी लेखनी से नारी जीवन की कोई समस्या छूटी नहीं है। मृणाल पाण्डे समाजोन्मुख लेखिका है।

महिला साहित्यकारों में मृणाल पाण्डे का स्थान सबसे महत्वपूर्ण है, क्योंकि ये नारी जीवन की यथार्थ समस्याओं को चित्रित करने में पूर्णतः सफल रही है। मृणाल पाण्डे का साहित्य उनके व्यक्तित्व एवं उनके समय के राजनीतिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, धार्मिक, सांस्कृतिक यथार्थ का दर्पण है।

संदर्भ ग्रंथ :

1) पटरंगपुर पुराण, मृणाल पाण्डे, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली. प्र. सं. 1993, पृ. 30
2) वही, पृ. 68
3) वही, पृ. 43
4) रास्तों पर भटकते हुए, मृणाल पाण्डे, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र. सं. 2000, पृ. 105
5) अपनी गवाही, मृणाल पाण्डे, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र. सं. 2003, पृ. 98
6) वही, पृ. 16
7) हमका दियो परदेस, मृणाल पाण्डे, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र. सं. 2001, पृ. 20
8) वही, पृ. 96, 97
9) देवी, मृणाल पाण्डे, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र. सं. 1993, पृ. 59
10) वही, पृ. 49
11) वही, पृ. 80
12) वही, पृ. 95